nwda.gov.in

पढ़ाने व जल बचाने के नए अध्याय का होगा शुभारंभ

आने वाले कल में सभी के लिए जल बचा रहे, इसके लिए आज ही संकल्पित प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। आमजन तक जल संरक्षण की जागरूकता पहुंचाना तो जरूरी है ही, नई पीढ़ी को अकादमिक और व्यावहारिक स्तर पर भी जल संरक्षण के बारे में पढ़ाने-सिखाने और इस संबंध में हो रहे प्रयासों के फलाफल को तय पैमानों पर आंकने की भी आवश्यकता है। नए वर्ष में भारत में जल संरक्षण को संबल देने के विशेष प्रयासों से परिचित करा रही हैं ये दो कहानियां:

पाठ्यक्रम से जल संरक्षण पर बनेगी बात

शैलेंद्र शर्मा • बांदा

बुंदेलखंड से जल संरक्षण की ज्ञानशाला नई पीढ़ी को न केवल पानी की अहमियत समझाएगी बल्कि उसे बचाने के नए-नए तरीके खोजने में दक्ष भी बनाएगी। यह संभव होगा उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिले के रूरी पारा गांव में बनने जा रहे विश्व के पहले जल विश्वविद्यालय से। यह विश्वविद्यालय पानी संबंधी चुनौतियों के समाधान के साथ विज्ञान और अभियांत्रिकी को एकीकृत कर वैश्विक जल संसाधन प्रबंधन व अनुसंधान से जल संरक्षण में नवाचार को बढ़ावा देगा।

प्रशासनिक भवन तैयार, पाठ्यक्रम घोषित: विश्वविद्यालय में जल विज्ञान, जल अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी, जल प्रबंधन, जल और मानविकी और जल व अंतरिक्ष जैसे विषय पढ़ाए जाएंगे। 70 एकड़ में प्रयोगशालाएं, अनुसंधान केंद्र, कक्षाएं और हास्टल तथा आचार्यों के लिए आवास बनेंगे। स्वीडन के गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. रविकांत पाठक संस्थापक और कुलपति तथा जल संचय के लिए पद्मश्री से सम्मानित उमाशंकर पांडेय महासचिव होंगे। विश्वविद्यालय का प्रस्ताव उत्तर प्रदेश शासन को भेजने के बाद राज्य सरकार से अनुबंध जैसे कार्य प्रगति पर हैं। बीते दिसंबर में प्रशासनिक भवन का कार्य पूरा हो चुका है। नए वर्ष में शिलान्यास व बुनियादी ढांचे का निर्माण हो जाएगा। दिसंबर, 2024 तक शिक्षण कार्य आरंभ कर दिया जाएगा।

गांवों तक पहुंचेगा ज्ञान: जल विश्वविद्यालय गांव-गांव पानी की पाठशाला भी लगाएगा। 500 गांवों तक खेत पर मेड़, मेड़ पर पेड़ वाला जखनी माडल पहुंचेगा। निजी विश्वविद्यालय की संकल्पना करने वाले हमीरपुर के मुस्करा निवासी डा. रविकांत पाठक ने भारत उदय कर्मयोगी आश्रम ट्रस्ट बनाया है। यूजीसी और सरकार के नियमों के तहत विश्वविद्यालय में सुविधाओं की व्यवस्था यही ट्रस्ट करेगा। प्रो. रविकांत पाठक बताते हैं कि विश्वविद्यालय के लिए सरकार द्वारा भूमि संबंधी अनापत्ति प्रमाण पत्र दिये जा चुके हैं। पद्मश्री उमाशंकर पांडेय कहते हैं कि आइआइटी बांबे के विशेषज्ञों समेत देश-विदेश के जल विशेषज्ञों से बात कर बुंदेलखंड के किसी एक शहर में हम जल साक्षरता भी शीघ्र आरंभ करेंगे।

हमीरपुर के तत्कालीन जिलाधिकारी आरपी सिंह को जल विश्वविद्यालय संबंधी पत्र सौंपते (बाएं) उमाशंकर पांडेय व प्रो. रविकांत पाठक • फाइल फोटो

हमीरपुर जिले में जल विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव उत्तर प्रदेश शासन को अग्रसारित किया जा चुका है। शासन स्तर से प्राप्त होने वाले निर्देश के अनुसार आगे कार्यवाही की जाएगी।

राहुल पांडेय, जिलाधिकारी, हमीरपुर, उप्र

विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

पानी की खपत-बचत परखेगा स्कोरकार्ड

अजय राय • नई दिल्ली

जल संरक्षण को लेकर तमाम योजानाएं और प्रयास चल रहे हैं, लेकिन जल की खपत और बचत को परखने या निगरानी का कोई प्रभावी तंत्र अभी नहीं है। एक स्कोरकार्ड विधि बनाई गई है जो शहरों में जल संरक्षण के लिए बेहद उपयोगी है। इसे किसी सोसायटी, भवन या परिसर में लगाकर वहां जल के उपभोग और भविष्य में कितने जल संरक्षण की आवश्यकता है, यह सारी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। साथ ही, यह भी बताया जा सकता है कि जल बचाने की कौन सी विधियां परिसर में कारगर होंगी। यह स्कोरकार्ड वैश्विक जल संरक्षण विशेषज्ञ डा. भक्ति लता देवी के नेतृत्व में तैयार किया गया है। जलस्मृति संस्था की संस्थापक डा. भक्ति लता देवी को हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित समारोह में जलप्रहरी सम्मान प्रदान किया गया है।

परिसरों में त्वरित मूल्यांकन: मूलरूप से महाराष्ट्र की रहने वाली डा. भक्ति लता देवी जल प्रबंधन में पीएचडी और पर्यावरण प्रौद्योगिकी में परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुकी हैं। वह आस्ट्रेलिया में रहकर 25 वर्ष तक जल संरक्षण पर कार्य कर चुकी हैं। पांच वर्ष पहले भारत आकर जल संरक्षण पर कार्य आरंभ किया है। उनका कहना है कि यह स्कोरकार्ड विधि शहरों में आवासीय और वाणिज्यिक परिसरों में जल संरक्षण स्थिति का साक्ष्य आधारित त्वरित मूल्यांकन प्रदान करती है। इससे समझा जा सकता है कि किसी परिसर में भूजल दोहन या जल का उपयोग ग्रीन जोन में है या रेड अथवा यलो जोन में। इसके साथ ही इस विधि के माध्यम से यह भी तय किया जा सकता है कि बेहतर जोन में जाने के लिए क्या उपाय करने होंगे। वर्तमान में हरियाणा में अटल भूजल योजना में क्षमता निर्माण विशेषज्ञ के तौर पर काम कर रहीं डा. भक्ति बताती हैं कि उपयोग सीमित करने और उपयोग हो चुके जल को संरक्षित करना होगा।

जल चैंपियन भी होंगे तैयार: बेंगलुरू में भी डा. भक्ति ने इस स्कोरकार्ड विधि को सफलतापूर्वक संचालित किया है। इसके अलावा उनकी संस्था जलस्मृति स्थानीय समुदाय को संगठित करने के लिए सामुदायिक जल चैंपियन भी तैयार करती है। सोसायटियों में सामुदायिक चैंपियन तैयार कर उन्हें जल संरक्षण के लिए कार्ययोजना दी जाती है। समय से सही प्रयास करने पर इन चैंपियंस को तय पुरस्कार राशि भी मिलती है। अब डा. भक्ति लता देवी दिल्ली के दस शिक्षण संस्थानों में भी इस स्कोरकार्ड विधि का उपयोग करेंगी।

उप्र में सोनभद्र के गोविंदपुर गांव में महिलाओं संग चर्चा करतीं डा. भक्ति लता देवी (बाएं से पांचवीं) • सौ. स्वयं

"आने वाले समय में सबको अपने लिए जल की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। हम एक सरकारी एजेंसी पर निर्भर नहीं रह सकते कि पानी वही देगी। अत: हम अपनी आवश्यकताओं को पहचानें और जल संचयन के रास्ते पर चलें।

डा. भक्ति लता देवी, जल प्रहरी पुरस्कार से सम्मानित